स्नातक:हिंदी(प्रतिष्ठा),द्वितीय वर्ष, चतुर्थ पत्र

20 वीं व्याख्यानमाला

-डॉ अभिमन्यु कुमार

केदारनाथ अग्रवाल

केदारनाथ अग्रवाल ग्रामीण परिवेश एवं लोक संवेदना के कवि हैं। उनके मन में सामान्य जन के मंगल की भावना विद्यमान है। उनकी रचना का केंद्र-बिंदु सर्वहारा, किसान और मज़दूर है। उसे क्रांति के लिए जगाना और प्रेरित करना कवि का उद्देश्य रहा है। बूर्ज्वा धारणओं, पाखंडी और कर्मकांडीय विश्वासों, अंध-भक्ति व अंध-विश्वासों एवं अतार्किक धारणाओं आदि से लोगों को मुक्त करना अनिवार्य है अन्यथा गाँवों का विकास तथा ग्रामीणों में सचेतना व संवेग आना संभव नहीं है। सचेतना व संवेग के बिना गाँव एवं लोक का विकास संभव नहीं है। इस लिए कवि स्वयं मोर्चे पर खड़ा हो कर कहता है-

मैं लड़ाई लड़ रहा हूँ मोर्चे पर

मैं अचेतन और चेतन सभी पर

वार करता जा रहा हूँ व्यक्तिवादी

सभ्यता को ध्वंस बिल्कुल कर रह हूँ।

केदार जी की कविता ग्रामीण परिवेश और लोक जीवन में गहराई से धँसी हुई है। उनकी कविता उसे जगाने के लिए लिखी गई है, जिसे हम रोज देखते हैं, जो खूब जाना-पहचाना है- वह हमसफर, दोस्त, भाई, भाई का भाई, पड़ोसी है जो खेत, खलिहान और दुकान में काम करता है। उसी को जगाना चाहता हैं। क्योंकि वही इस देश की असली सभ्यता एवं संस्कृति की संवेदना का आज तक वाहक बना हुआ है। केदार नाथ लोकधर्मी कवि है और ग्रामीण परिवेश एवं लोक संवेदना उनके काव्यगीतों में रचा-बसा पड़ा है-

हम लेखक हैं कथाकार हैं

हम जीवन के भाष्यकार हैं

हम कवि हैं जनवादी।

हम सृष्टा हैं

श्रम साधन के

मुद-मंगल के उत्पादन के

हम द्रष्टा हितवादी हैं।

केदार नाथ अग्रवाल स्वयं को बड़ा भाग्यवान मानते हुए देश की चिरकालिक लोकधर्मी परंपरा से जोड़ते हुए कहते हैं-

चाँद, सूर, तुलसी, कबीर के

संतों के हरिचंद वीर के

हम वंशज बड़भागी।

शायद इसी बड़ी परंपरा से जुड़े होने का बड़प्पन 'समय की धार में धँस कर खड़े' इस कवि से सहज ही कहलवा देता है-

मैं हूँ

अनास्था पर लिखा

आस्था का शिलालेख

... ...मृत्यु पर जीवन के जय की घोषणा।

कवि किसानों की साधनहीनता, विवशता और शोषण से मुक्ति के लिए संघर्ष की चेतना को किसान की लहलहाती फसलों के द्वारा प्रकट करता है-

आर-पार चौड़े खेतों में

चारों ओर दिशाएं घेरे

लाखों की अगणित संख्या में

ऊँचा गेहूँ डटा खड़ा है।

वास्तव में कवि केदार नाथ की रचनाएं गाँव के जीवन और गाँव में रहनेवालों की संवेदना को बुलंद करती हैं।

केदार जी ने प्रकृति और उसके सौंदर्य को अपनी कविता में प्रमुख स्थान दिया है। लेकिन उनका प्रकृति-चित्रण, केवल परम्परा-निर्वाह के रूप में न हो कर अपने समय की दृष्टि से सृजित किया हुआ है। वह उनके अपने समय का प्रकृति-चित्रण है। इस तरह, वे इस क्षेत्र में भी परम्परा को नवीनता प्रदान करते है। उनके लिए केन नदी का सौंदर्य एक परम्परा भी है और नवीनता भी। युग-सापेक्षता उनकी काव्य-दृष्टि का महत्वपूर्ण आयाम रहा है, किन्तु उसकी नींव में, मनुष्यता का वह सबसे निचला सोपान है, जो युग-युगों तक उसकी कड़ी को विस्तार देता रहेगा। वह अपने युग की कविता लिखकर भी केवल अपने समय की सीमा में नहीं बंधे रहते। वे उसका अतिक्रमण करते है और उसके उस मूल को पकड़ते है, जो भावी युगों तक कविता और मनुष्यता दोनों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बना रहेगा।